समन्वित कृषि प्रणाली: एक किसान की आजीविका में बदलाव

श्री गोवर्धन जाट
गाँव-सोडा, तह. मालपुरा, टोंक, राजस्थान
मो. 9928773250

श्री गोवर्धन जाट, उम्र 60 वर्ष, गाँव-सोडा, तह. मालपुरा, एक संयुक्त परिवार (29 सदस्य) का मुखिया और राजस्थान के अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र का एक बड़े जोत का किसान जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि एवं सहायक व्यवसाय पशुपालन है। इनके परिवार के सभी सदस्य इन्हीं कार्यों में लगे हुए थे। जिसके पास जमीन तो 20 हेक्टर थी लेकिन वह इन कार्यों से अपनी सम्पूर्ण तरीके से आजीविका नहीं चला सकता था। पारंपरिक तरीके से खेती व पशुपालन करना ही उनकी कार्य की परिपाटी रही, जिससे वह अपने इस संयुक्त परिवार का अच्छे तरीके से भरण-पोषण नहीं कर पाता था।

सोच में बदलाव के क्षण:- गाँव सोडा को केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर द्वारा सन् 1997-98 में अंगीकृत किया गया जिसके दौरान संस्थान द्वारा विकसित तकनीकियाँ, किसान गोष्ठी, प्रक्षेत्र दिवस, किसान भ्रमण एवं स्वास्थ्य शिविरों के जरिये किसानों तक पहुँचायी जाती थी। वे कहते हैं "मेरा सम्पर्क संस्थान के वैज्ञानिकों से ऐसी घटना के साथ हुआ कि उन पर विश्वास करके सीखनें जैसा रहा है। मेरे पास 15-16 राठी नस्ल की गाय थी जिनसे दूध एवं खाद उत्पादन होता था। यह व्यवसाय पिछले कई पीढ़ियों से चला आ रहा था और पालने का पारंपरिक तरीका था। मैं देखता था, कि मेरी ज्यादातर गाय 1.5 से 2 साल तक खाली रहती उनसे दूध उत्पादन नहीं मिलता एवं साथ ही लागत खर्चा भी बढ़ता रहता था। एक बार तो ऐसा हुआ कि 3-4 साल अकाल पड़ा जिससे अधिकतर गायें ताव में आयी ही नहीं। उन दिनों मेरी मुलाकात संस्थान के पशु शरीर क्रिया विज्ञान के वैज्ञानिकों से हुई जिनको मैंने मेरी गायों की समस्या बताई। उनके प्रजनन प्रबन्ध एवं (हार्मोन उपचार, मिनरल मिक्सचर) संतुलित खिलाई पिलाई के सम्बन्धित सुझाव से मेरी सभी खाली गायें ताव मे आ गयी। वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान ने मुझ में उन्नत तकनीकी से पशुपालन करने में विश्वास जगा दिया। इसके बाद मेरा परिचय संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों से भी हुआ जिनसे मुझे उन्नत नस्ल के जानवर, स्वास्थ्य सम्बन्धि जानकारी, उन्नत किस्म के बीज एवं खाद आदि के बारे में जानकारी मिली। ये सब बातें मेरी सोच में धीरे-धीरे ऐसा बदलाव लायी कि मैं इन सब नवीन तकनीकियों के बारे में जानकारी जुटाने लगा, साथ ही अपनाने भी लगा।

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर से जुड़ना एवं उसका प्रभाव:-

1. सर्वप्रथम सन 1999 में संस्थान से 300 रूपये में 3 माह की सिरोही नस्ल की बकरी ली। उसका वैज्ञानिक पद्धति से लालन-पालन किया। आज मेरे पास कुल 64 बकरियाँ हैं। पिछले पाँच सालों में नर व मादा बकरियों एवं मेमनों को बेचकर लगभग 1,60,000 प्रति वर्ष आय प्राप्त हुई है। साथ ही आस-पास के किसानों को सिरोही नस्ल के उत्कृष्ट जानवर भी बेचता हूँ। पिछले दो साल पहले मैंने मालपुरा नस्ल की 25 भेड़े खरीदी जिनसे आज मेरे को किसी भी समय आमदनी का एक स्त्रोत और मिल गया।

2. सन् 2012 में केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर के संस्थान किसान सहभागिता कार्यक्रम के तहत मैंने अपनी 0.5 हैक्टेयर जमीन पर उद्यान-चरागाह पद्धति को अपनाया इसके अन्तर्गत इस जमीन पर बेर, आँवला, नींबू के फलदार पौधों के साथ चारा के लिये अरडू वृक्ष एवं अंजन घास लगायी। जिससे फसलों के साथ-साथ जानवरों को चारे की पूर्ति हाने लगी एवं फलदार पौधों में से बेर के फल भी प्राप्त होने लगे।

3. उन्नत किस्म के बीज, समय पर फसल की बुवाई, मृदा परीक्षण एवं अन्य शस्य क्रियाओं के बारे में संस्थान के वैज्ञानिकों का ज्ञान मेरे को समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने में मददगार साबित हुआ। जिसके फलस्वरूप प्रतिवर्ष रूपये 5,00,000 कृषि से एवं रूपये 2,00,000 भेड़, बकरी एवं गायों से शुद्ध आय प्राप्त हो जाती है।

गोर्वधन जी ने अपने शब्दों में कहा कि उपरोक्त तकनीकी सलाहों को अपनाने से मेरी आय में इजाफा हुआ जिसको मैं अपने एवं अपने भाईयों के बच्चों की शिक्षा, रहन-सहन पर खर्च करता हूं साथ ही कृषि से सम्बन्धित उपकरण (ट्रेक्टर, ट्रोली, कल्टीवेटर आदि) भी खरीद लिये हैं। यह आय मेरी आजीविका एवं जीवन स्तर में सुधार लाने में एक कारगर साबित हो रही है। अन्त में मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि मेरे लिये भेड-बकरी, पालन कृषि से भी अधिक विश्वसनीय है, क्योंकि कृषि से उत्पादन वर्षा पर निर्भर है, अपितु भेड़-बकरी पालन में ऐसा नहीं है।

(स्रोत: डॉ. एल.आर. गुर्जर, डॉ. राजकुमार, एवं डॉ.एस.एम.के. नकवी, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, मालपुरा-टोंक, राज.)

==========